

अगस्त 2023

# दादावाणी

Retail Price ₹ 20



ये सब रिलेटिव संबंध हैं, रियल संबंध नहीं हैं। प्रतिक्रमण नहीं करते हो तो फट (टूट) जाते हैं।  
प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है ? जोड़ना। सामने वाला व्यक्ति फाड़े और हम सिलें तो वह कपड़ा टिकता है।





## पूज्य दीपकभाई का ब्राजील - कनाडा - USA का सत्संग प्रवास

ब्राजील : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 7 से 11 जून 2023



दरभंग



इन्फोर्मल सत्संग

USA - कनाडा : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 16 से 29 जून 2023



न्यूयॉर्क

इन्फोर्मल



न्यू जर्सी



सुब - पेनिन्सुलोविया

ईस्ट कोस्ट सिडार



मॉन्ट्रियल



टोरन्टो



टांम्पा



वर्ष : 18 अंक : 10

अखंड क्रमांक : 214

अगस्त 2023

पृष्ठ - 28

# दादावाणी

प्रतिक्रमण के पुरुषार्थ से, छूटेंगे सभी हिसाब

**Editor : Dimple Mehta**

© 2023

Dada Bhagwan Foundation  
All Rights Reserved.

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta** on behalf of  
**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,  
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Owned by**

**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,  
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Printed at**

**Amba Multiprint**

Opp. H B Kapadiya New High  
School, At-Chhatral, Tal: Kalol,  
Dist. Gandhinagar - 382729

**Published at**

**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,  
Dist.-Gandhinagar - 382421

**संपर्क सूत्र :**

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

[www.dadabhagwan.org](http://www.dadabhagwan.org)

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:  
+91 8155007500

**सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)**

**5 साल**

भारत : 1000 रुपये

**वार्षिक**

भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

**संपादकीय**

स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति करवाने के बाद परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने व्यवहार को पूर्ण करने के लिए पाँच आज्ञाएँ दी हैं। वे हमेशा कहते थे कि हमने आपको ज्ञान तो दिया है, परंतु उसे आप खो बैठोगे इसलिए स्वरूप जागृति में सतत रहने के लिए पाँच आज्ञा ही इस ज्ञान की रक्षा के लिए बाड़ है। पाँच आज्ञा के पालन से मोक्ष में जा सकेंगे और इसके अलावा क्या कहा है? ‘प्रतिक्रमण’, वह मोक्षमार्ग का सच्चा साथी है, जहाँ अतिक्रमण हो जाए वहाँ प्रतिक्रमण करना। प्रतिक्रमण करना, वह अपना पुरुषार्थ है।

प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? जोड़ना। सामने वाला व्यक्ति फाड़े और हम सिल दें तो वह कपड़ा टिकेगा। पूर्व के ऋणानुबंध से छूटने के लिए घर के सभी व्यक्तियों के साथ, परिवार वाले, अड़ोसी-पड़ोसी, फ्रेंड सर्कल, सहाध्यायियों के साथ पहले आपसे कुछ न कुछ मनुदुःख हुए हों, उसके आपको प्रतिक्रमण करने हैं। दिन में फुरसत मिली कि तुरंत परिवार वाले, एक-एक व्यक्ति को याद कर-करके जिंदगी भर के प्रतिक्रमण शुरू कर देने चाहिए, तो धीरे-धीरे राग-द्वेष के बहीखाते साफ होंगे।

हमेशा राग कब उत्पन्न होता है? द्वेष में से राग उत्पन्न होता है और फिर राग में से वापस द्वेष उत्पन्न होता है। पूर्व जन्म के अतिक्रमण दोष से, ये राग-द्वेष उत्पन्न हुए हैं। अब राग-द्वेष वाली हर एक चीकणी फाइल के हृदय से प्रतिक्रमण करके, शुद्ध करके निर्दोष दृष्टि विकसित करना, वह मोक्षमार्ग के लिए आवश्यक है। जब घर के लोग निर्दोष दिखाई दें और खुद के ही दोष दिखेंगे तब सच्चे प्रतिक्रमण होंगे।

इस ज्ञान के बाद किंचित्मात्र भी अभाव, द्वेष, हिंसक, पीड़ादायक, तिरस्कार, तरछोड़, बैरभाव हममें नहीं होने चाहिए, उसके बावजूद भी भरा हुआ माल डिस्चार्ज हो, तब ज्ञानी पुरुष की आज्ञा से फाइल-1 से प्रतिक्रमण करवाने से पुराने अभिप्राय धुल जाएंगे। सहाध्यायियों के साथ ही ज्यादा बैर बंधे हुए होते हैं। दादाश्री ने औरंगाबाद में जो प्रतिक्रमण करवाए थे, वे प्रतिक्रमण तो दुनिया का सब से बड़ा आश्चर्य है! अपने प्रतिक्रमण में तो बहुत असर है। एक घंटे ही यदि सच्चे हृदय से शुद्ध प्रतिक्रमण करोगे तो सामने वाले में बदलाव हो जाएगा, सामने वाले का मन वापस लौटेगा, उसका भाव आपके प्रति नरम होता जाएगा, हल्का होता जाएगा, सामने वाले की वृत्ति शांत हो जाएगी, हृदय परिवर्तन होगा।

यह प्रतिक्रमण तो दादाश्री की सूक्ष्मातिसूक्ष्म खोज है। यदि इस खोज को समझ लें तो इस राग-द्वेष की अंतर जलन शांत होगी। अक्रम के ‘इस प्रतिक्रमण’ से व्यवहार और निश्चय से दाग लगने बंद हो जाएँ तो हल्के फूल जैसे, बोझ रहित हो जाएँगे तब यहाँ पर मुक्ति का अनुभव करेंगे।

- जय सच्चिदानंद

## प्रतिक्रमण के पुरुषार्थ से, छूटेंगे सभी हिसाब

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंद्रभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

### ( सूत्र-1 )

**पूरा जगत् हिसाब ही है सारा और हिसाब चुकाने के लिए अपने यहाँ आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान हैं।**

**प्रश्नकर्ता :** पूर्व जन्म के ऋणानुबंध से छूटने के लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** हमें जिसके साथ पूर्व का ऋणानुबंध हो और वह हमें पसंद ही ना हो, उसका सहवास पसंद ही ना हो और फिर भी अनिवार्य रूप से सहवास में रहना पड़ता हो, तो क्या करना चाहिए? बाहर का व्यवहार उसके साथ रखना चाहिए, लेकिन अंदर उसके नाम के प्रतिक्रमण करने चाहिए। क्योंकि हमने पिछले जन्म में अतिक्रमण किया था, यह उसका परिणाम है। काँजेज क्या किए थे? तो कहते हैं, उसके साथ पूर्व जन्म में अतिक्रमण किया था। उस अतिक्रमण का इस जन्म में फल आया।

किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए। यह तो, अनजाने में अपार दुःख होते हैं! सामने वाले को दुःख नहीं हो, उस तरह से आप काम लो, वह क्रमण कहलाता है। जबकि अतिक्रमण कब कहलाता है? आपको जल्दी हो और वह चाय पीने चला गया हो, फिर जब वह वापस आए तब आप तुरंत उस पर चिल्लाते हो कि, कहाँ गया था? नालायक है और ऐसा-वैसा करने लगते हो, यह अतिक्रमण किया कहलाता है। और उसमें आपकी कोई इच्छा नहीं होती। वह स्वाभाविक रूप से आपसे हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** जिनके साथ कुछ ऋणानुबंध हो, उन्हीं से टकराव हो जाता है न? अन्य किसी से टकराव नहीं होता न?

**दादाश्री :** वह तो, जहाँ पहले के हिसाब होते हैं न, वहीं पर टकराव होता है। पूरा जगत् हिसाब ही है सारा और हिसाब चुकाने के लिए अपने यहाँ आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान हैं। अन्य जगहों पर उनके पास हिसाब चुकाने का कोई साधन नहीं है। आप अब थोड़ा-बहुत चुकाने लगे हो क्या? हिसाब ही चुकाने हैं न? और क्या करना है?

अतिक्रमण होना, वह स्वभाविक है लेकिन प्रतिक्रमण करना, वह अपना पुरुषार्थ है। यानी वह जो किया हो, वह साफ हो जाता है। प्रतिक्रमण से वह दाग तुरंत साफ हो जाता है। प्रतिक्रमण करेंगे तो प्लस-माइनस (जोड़ना-घटाना) हो जाएगा। अतः अंदर आप उसके लिए माफी माँग लो। माफी माँगते रहो कि मैंने जो-जो दोष किए हैं, उसके लिए माफी माँगता हूँ। किसी भी भगवान की साक्षी में माफी माँग लो, तो सब खत्म हो जाएगा।

### ( सूत्र-2 )

**‘प्रतिक्रमण’ तो आप बहुत करना। जो लोग आपके आसपास हैं, जिन्हें आपने परेशान किया हो, रोज़ एक-एक घंटे उनके ‘प्रतिक्रमण’ करना।**

निरंतर प्रतिक्रमण करके गाढ़ राग-द्वेष की चिपचिपाहट को धोकर पतली कर देनी चाहिए।



अगर सामने वाला टेढ़ा (मिला) है तो वह आपकी भूल है, आपने वह धोया नहीं है और अगर धोया भी है तो ठीक से पुरुषार्थ नहीं हुआ है। जब भी समय मिले, तब जो गाढ़ ऋणानुबंधी हों, उनके (प्रति राग-द्वेष को) धोते रहना चाहिए। ऐसे बहुत नहीं होते, पाँच या दस के साथ ही गाढ़ ऋणानुबंध होते हैं। उनका ही प्रतिक्रमण करना है, उस गाढ़पन को ही धोते रहना है। कौन-कौन लेने-देने वाले हैं, उन्हें ढूँढ निकालना है। अगर नया खड़ा होगा तो तुरंत ही पता चल जाएगा। लेकिन जो पुराने हैं उन्हें ढूँढ निकालना है। जो-जो नज़दीक के ऋणानुबंधी होते हैं, वहीं पर अधिक गाढ़ापन होता है। राग-द्वेष कहाँ फूट निकलता है? जहाँ गाढ़ापन हो वहीं फूट निकलता है।

प्रतिक्रमण तो आप बहुत ही करना। जितने आपके सर्कल में यदि पचास-सौ व्यक्ति हों, जिन-जिनको आपने परेशान किया हो, तो जब खाली समय हो तब बैठकर उन सब के एक-एक घंटा, एक-एक को याद करके प्रतिक्रमण करना। जितनों को परेशान किया है, वह फिर धोना तो पड़ेगा न? तब ज्ञान प्रकट होगा।

### ( सूत्र-3 )

जहाँ सत्य मानने में आया वहाँ राग और द्वेष शुरू हो जाते हैं। इन सबको सच्चा माना उसके ही प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं।

यह संसार तो *तायफ़ा* (फज़ीता) है बिल्कुल, मज़ाक जैसा है। एक घंटे यदि बेटे के साथ लड़ें तो बेटा क्या कहेगा? 'आपको यहाँ रहना हो तो मैं नहीं रहूँगा।' बाप कहे, 'मैं तुझे जायदाद नहीं दूँगा।' तो बेटा कहे, 'आप नहीं देने वाले कौन?' यह तो मार-ठोककर लें, ऐसे हैं। अरे! कोर्ट में एक बेटे ने वकील से कहा कि, 'मेरे बाप की नाक कटे ऐसा करो तो मैं आपको तीन सौ रुपये ज़्यादा दूँगा।' बाप बेटे से कहता है कि, 'तुझे

ऐसा जाना होता, तो जन्म होते ही तुझे मार डाला होता!' तब बेटा कहे कि, 'आपने मार नहीं डाला, वही तो आश्चर्य है न!' ऐसा नाटक होने वाला हो तो किस तरह मारोगे? ऐसे-ऐसे नाटक अनंत प्रकार के हो चुके हैं! अरे! सुनते ही कान के परदे फट जाएँ। अरे, इससे भी तरह-तरह का बहुत कुछ जग में हुआ है इसलिए चेतो जगत् से! अब 'खुद के' देश की ओर मुड़ो, 'स्वदेश' में चलो। परदेश में तो भूत ही भूत है। जहाँ जाओ वहाँ!

यानी ये सभी विकल्प हैं। अब, इन विकल्पों में रहकर हमें अपना काम निकाल लेना है। क्योंकि इन विकल्पों को लोगों ने परमेनन्ट बना दिया है और वास्तव में ये टेम्पररी एडजस्टमेन्ट हैं, ये ड्रामेटिक एडजस्टमेन्ट हैं। ये आपके फादर, आपकी वाइफ, आपके भाई ये सभी ड्रामे के, ओन्ली फोर ड्रामा है। जब तक अपना यह देह है तब तक का यह ड्रामा है!

यह (रिलेटिव संबंध) तो नाटक है। नाटक में पत्नी-बच्चों को हमेशा के लिए खुद के बना दे तो क्या चलेगा? हाँ, जैसे नाटक में बोलते हैं, वैसा बोलने में हर्ज नहीं है कि 'यह मेरा बड़ा बेटा, शतायु'। लेकिन सब दिखाऊ, नाटकीय। इन सब को सही माना, उसके ही प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। यदि सही नहीं माना होता तो प्रतिक्रमण करने ही नहीं पड़ते। जहाँ सत्य माना गया, वहाँ राग और द्वेष शुरू हो जाते हैं और प्रतिक्रमण से ही मोक्ष है। ये 'दादा' दिखाते हैं, उस आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान से मोक्ष है।

### ( सूत्र-4 )

ये सब रिलेटिव संबंध हैं, रियल संबंध नहीं हैं। प्रतिक्रमण नहीं हो तो फट (टूट) जाते हैं। प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? जोड़ना। सामने वाला व्यक्ति फाड़े और हम सिलें तो वह कपड़ा टिकता है।

**प्रश्नकर्ता :** कभी कभार तो मन दुःखी हो जाता है कि उन्होंने भी ज्ञान लिया है, हमने भी ज्ञान लिया है, तो ऐसा क्यों होता है?

**दादाश्री :** ये तो सब कर्म के उदय हैं, उसमें हमें प्रतिक्रमण करना है। उसमें धक्का लगे बगैर रहता नहीं। उनकी इच्छा ऐसी नहीं होती, फिर भी सब कर्म के धक्के लगते रहते हैं। कर्म तो भुगतने ही पड़ेंगे न!

**प्रश्नकर्ता :** मुझे ऐसा होता है कि, उनका भला करूँ लेकिन मुझसे बिगड़ ही जाता है और मैं गलत साबित हो जाती हूँ।

**दादाश्री :** लेकिन उसमें क्या हर्ज है? उससे हर्ज क्या है? हुआ वह करेक्ट! जिसे भला करना है, उसे कोई डर रखने की ज़रूरत नहीं है। जिसे बुरा करना है, वह चाहे जितना भी डर रखे फिर भी उससे कुछ फायदा होने वाला नहीं। यानी हमें 'भला करना है', ऐसा निश्चित रखना है।

**प्रश्नकर्ता :** पहले मुझे बहुत डर लगता था, अब डर नहीं लगता।

**दादाश्री :** लेकिन ऐसी बातें भी करने की ज़रूरत नहीं है। वे यदि बुरा मानकर घर चले गए हों फिर भी जब वे दूसरे दिन आएँगे तब खुश हो जाएँगे, हमें प्रतिक्रमण करना है।

ये सब रिलेटिव संबंध हैं, रियल संबंध नहीं हैं। प्रतिक्रमण नहीं करते हो तो फट (टूट) जाते हैं। प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? जोड़ना। सामने वाला व्यक्ति फाड़े और हम सिलें तो वह कपड़ा टिकता है। लेकिन सामने वाला फाड़े और हम भी फाड़ें तो क्या बचेगा?

**प्रश्नकर्ता :** मेरे पति मुझसे अलग रहते हैं, बच्चे भी ले गए हैं। तो मेरे कर्म में ऐसा होगा इसलिए हुआ होगा न?

**दादाश्री :** हाँ! और क्या? नया तो कुछ होता नहीं न! उसके प्रतिक्रमण नहीं किए, इसलिए ऐसा हुआ है। प्रतिक्रमण करने से वापस लौटता है।

( सूत्र-5 )

**जहाँ घर्षण होता है, वहाँ उसके प्रतिक्रमण करो। ताकि घर्षण खत्म हो जाएँ।**

पूरा जगत् घर्षण और संघर्षण में पड़ा हुआ है। सारी आत्मशक्ति यदि कभी खत्म होती हो तो वह घर्षण से। संघर्ष से थोड़ा भी टकराए तो खतम! सामने वाला टकराए तो हमें संयमपूर्वक रहना चाहिए! टकराव तो होना ही नहीं चाहिए।

घर्षण ही सिर्फ नहीं हो, तो मनुष्य मोक्ष में जाए। कोई सीख गया कि मुझे घर्षण में आना ही नहीं है। तो फिर उसे बीच में गुरु की या किसी की भी ज़रूरत नहीं है। एक-दो जन्मों में सीधा मोक्ष में जाएगा। 'घर्षण में आना ही नहीं है', ऐसा यदि उसकी श्रद्धा में आ गया और निश्चित ही कर लिया, तो तब से ही समकित हो गया! इसलिए यदि कभी किसी को समकित करना हो तो हम गारन्टी देते हैं कि जाओ, घर्षण नहीं करने का निश्चय करो, तब से ही समकित हो जाएगा!

**प्रश्नकर्ता :** घर्षण और संघर्षण से मन और बुद्धि पर घाव लगते हैं?

**दादाश्री :** अरे! मन पर, बुद्धि पर तो क्या, पूरे अंतःकरण पर घाव लगते रहते हैं और उसका असर शरीर पर भी पड़ता है! यानी घर्षण से तो कितनी सारी मुश्किलें हैं!

अहिंसा तो ऐसी नहीं है कि पूर्णतः समझ में आ जाए और पूरी तरह से समझना बहुत कठिन है। उसके बजाय ऐसा तय किया हो कि, 'घर्षण में कभी भी नहीं आना है'। तो फिर क्या होगा? कि शक्तियाँ अमानत रहेगी और दिनोंदिन

शक्तियाँ बढ़ती ही जाएगी। उसके बाद घर्षण से होने वाला नुकसान नहीं होगा।

यदि कभी घर्षण हो जाए तो घर्षण के बाद हम प्रतिक्रमण करेंगे तो साफ हो जाएगा। यह समझना चाहिए कि यहाँ पर घर्षण हो जाता है, तो वहाँ प्रतिक्रमण करना चाहिए, वर्ना बहुत जोखिमदारी है। इस ज्ञान से मोक्ष तो जाओगे, लेकिन घर्षण से मोक्षमार्ग में विघ्न बहुत आएँगे और देर लगेगी!

यदि इस दीवार के लिए उल्टे विचार आएँ तो हर्ज नहीं है, क्योंकि इसमें एक तरफा नुकसान है। जबकि जीवित के लिए एक उल्टा विचार आया तो जोखिम है। दोनों तरफ से नुकसान होता है। लेकिन यदि हम उसका प्रतिक्रमण करेंगे तो सारे दोष खत्म हो जाएँगे। अतः जहाँ-जहाँ घर्षण होता है, वहाँ उसके प्रतिक्रमण करो। जिससे घर्षण खत्म हो जाएँ।

सामने वाला 'भाग' लगाए तो हमें 'गुणा' करना है, ताकि रकम उड़ जाए। सामने वाले व्यक्ति के बारे में यह सोचना ही गुनाह है कि, 'उसने मुझे ऐसा कहा, वैसा कहा'। यहाँ रास्ते पर चलते समय यदि पेड़ से टकरा गए तो उससे क्यों नहीं लड़ते? पेड़ को जड़ कैसे कह सकते हैं? जो टकराते हैं, वे सभी हरे पेड़ ही हैं! यदि गाय का पैर अपने (पैर) पर आ जाए तो हम कुछ कहते हैं क्या? ऐसा ही इन सब लोगों का है। 'ज्ञानी पुरुष' सभी को कैसे क्षमा कर देते हैं? वे समझते हैं कि ये बेचारे समझते नहीं हैं, पेड़ जैसे हैं। समझदार को तो कहना ही नहीं पड़ता, वह तो भीतर ही भीतर तुरंत प्रतिक्रमण कर लेता है।

जिसका टकराव नहीं होगा, उसका तीन जन्मों में मोक्ष हो जाएगा, इस बात की मैं गारन्टी देता हूँ। टकराव हो जाए तो प्रतिक्रमण कर लेना। टकराव पुद्गल का है और पुद्गल से पुद्गल के टकराव का नाश प्रतिक्रमण से होता है।

## ( सूत्र-6 )

सब से बड़ा प्रतिक्रमण है, दादा भगवान की नौ कलमें रखी गई हैं न, वे पूरे जगत् के लिए कल्याणकारी प्रतिक्रमण है।

प्रश्नकर्ता : तो टकराव को टालने का उपाय केवल प्रतिक्रमण ही है या कुछ और भी है?

दादाश्री : दूसरा कोई हथियार है ही नहीं। इस दुनिया में प्रतिक्रमण के सिवा और कोई साधन नहीं है, वह उच्चतम साधन है। ये हमारी नौ कलमें, वे भी प्रतिक्रमण ही हैं।

ये गुणा-भाग क्यों सिखाए जाते हैं कि यदि गुणा की रकम बहुत बढ़ जाए तो उसी रकम से भाग लगा देना तब शेष कुछ नहीं बचेगा। अगर गुणा की रकम बढ़ जाए और उसका बोझ लगने लगे तो उसमें उतनी ही रकम से भाग लगाओगे तो बोझ कम हो जाएगा। और जोड़-बाकी तो नैचुरल है। उसमें किसी का कुछ नहीं चल सकता। इस जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, उसमें नुकसान हो रहा हो या फायदा, वह नेचर के हाथ में है और गुणा-भाग को वह खुद लादकर घूमता रहता है।

प्रश्नकर्ता : हमारी जो प्रकृति है, उसे यदि गुणा करेंगे तो वह बढ़ जाएगी। इसलिए उसका भाग लगाना चाहिए। प्रकृति को प्रकृति से भाग लगाना चाहिए, इसे जरा समझाइए।

दादाश्री : यानी ये कलम बार-बार बोलने से उसमें भाग लगता रहेगा और कम होता जाएगा। यह कलम नहीं बोलेंगे तो (प्रकृति रूपी) पौधा अपने आप पनपता रहेगा। इसलिए इसे बार-बार बोलने से कम हो जाएगा। ये जैसे-जैसे बोलोगे न, तो अंदर प्रकृति का जो गुणा हुआ है वह टूट जाएगा और आत्मा का गुणा होगा और प्रकृति का भाग होगा। तब आत्मा पुष्ट होता जाएगा। जैसे

समय मिले कि ये नौ कलमें रात-दिन बोलते रहना! फुरसत मिलते ही बोलना। हम तो सभी दवाइयाँ दे देते हैं, सबकुछ समझा देते हैं।

ये नौ कलमें तो आपके हिसाब जो सभी से बंधे हुए हैं, अनंत जन्मों से, उन हिसाब से छूटने के लिए दी हैं, बहीखाते साफ करने के लिए दी हैं। ये नौ कलमें बोलने से, सामने वाले के साथ का ऋणानुबंध और सारे हिसाब संपूर्णरूप से चुक नहीं जाते। गांठ रहती है, लेकिन जली हुई गांठ जैसी रहती है। फिर ज्यादा हिसाब नहीं रहता। यहाँ अभी, उसका पूरा रस खत्म हो जाता है, ये बोलने से।

### ( सूत्र-7 )

**अब खुद प्रतिक्रमण कब कर सकता है?** जब खुद को जागृति हो तब। ज्ञानी पुरुष से ज्ञान प्राप्त होने पर वह जागृति उत्पन्न होती है। हमें प्रतिक्रमण कर लेना है, यानी हम ज़िम्मेदारी में से छूटे।

**प्रश्नकर्ता :** कई बार हमें बुरा लगता है कि मैं इतना सब करता हूँ, फिर भी यह मेरा अपमान करता है ?

**दादाश्री :** हमें उसका प्रतिक्रमण करना पड़ता है। यह तो व्यवहार है। इसमें सभी तरह के लोग हैं। वे मोक्ष नहीं जाने देते।

**प्रश्नकर्ता :** वह प्रतिक्रमण हमें क्यों करना है ?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण इसलिए करना है कि 'इसमें मेरे कर्म का उदय था और आपको ऐसा कर्म बाँधना पड़ा', उसका प्रतिक्रमण करता हूँ और फिर से ऐसा नहीं करूँगा कि जिससे किसी को मेरे निमित्त से कर्म बाँधना पड़े।

जगत् किसी को मोक्ष जाने दे ऐसा नहीं है। सब तरफ से अँकुड़े (हुक) यों खींच ही लाते हैं। उसके लिए यदि हम प्रतिक्रमण करें तो अँकुड़े छूट

जाएँगे। इसीलिए महावीर भगवान ने आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान, ये तीनों चीजें एक ही शब्द (प्रतिक्रमण) में दी हैं। और कोई रास्ता ही नहीं है। अब खुद प्रतिक्रमण कब कर सकता है? जब खुद को जागृति हो तब। ज्ञानी पुरुष से ज्ञान प्राप्त होने पर वह जागृति उत्पन्न होती है। हमें प्रतिक्रमण कर लेना है, यानी हम ज़िम्मेदारी में से छूटे।

**प्रश्नकर्ता :** कोई हमारा अपमान करे, फिर भी हमें उसका प्रतिक्रमण करना है ?

**दादाश्री :** अपमान करे तभी प्रतिक्रमण करना है, हमें मान दे तब नहीं करना है। प्रतिक्रमण करने से उस पर द्वेषभाव तो होगा ही नहीं। ऊपर से उस पर अच्छा असर पड़ेगा। हमारे प्रति द्वेषभाव नहीं होगा, वह तो पहला स्टेप, पर बाद में उसे खबर भी पहुँचती है।

**प्रश्नकर्ता :** उसके आत्मा को पहुँचती है क्या ?

**दादाश्री :** हाँ, ज़रूर पहुँचती है। फिर वह आत्मा उसके पुद्गल को भी धकेलता है कि 'भाई फोन आया तेरा।' अपना यह प्रतिक्रमण है, वह अतिक्रमण के ऊपर है, क्रमण के ऊपर नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** बहुत प्रतिक्रमण करने होंगे ?

**दादाश्री :** जितनी स्पीड से हमें मकान बनाना है, उतने राजमिस्त्री हमें बढ़ाने होंगे। ऐसा है न, कि बाहर के लोगों के प्रति प्रतिक्रमण नहीं होंगे तो चलेगा, पर अपने आस-पास के और नज़दीकी घर वाले हैं, उनके प्रतिक्रमण अधिक करने होंगे। घर वालों के लिए मन में भाव रखना कि साथ में जन्मे हैं, साथ रहते हैं, वे कभी इस मोक्षमार्ग में आएँ।

### ( सूत्र-8 )

**जब घर के लोग निर्दोष दिखें और खुद के ही दोष दिखें, तब सच्चे प्रतिक्रमण होते हैं।**



आपके घर के सभी लोगों से आपको कुछ न कुछ पहले दुःख हुआ होगा, उसके आपको प्रतिक्रमण करने हैं। संख्यात या असंख्यात जन्मों में जो राग-द्वेष, विषय, कषाय से दोष हुए हों, उसके लिए क्षमा माँगता हूँ। इस तरह घर के एक-एक व्यक्ति का रोज़ाना प्रतिक्रमण करना है। फिर आसपास के, अड़ोस-पड़ोस के सभी लोगों के लिए उपयोगपूर्वक यह करते रहना चाहिए। आप करोगे उसके बाद यह बोझ हल्का हो जाएगा। यों ही हल्का नहीं होगा। हमने इस तरह पूरे जगत् के साथ निवारण किया था। पहले इस तरह निवारण किया था, तभी तो यह छुटकारा हुआ। जब तक आपके मन में हमारे लिए दोष है, तब तक हमें चैन नहीं पड़ने देगा! अतः जब हम इस तरह प्रतिक्रमण करते हैं, तब आपमें भी (दोष) मिट जाता है। यानी आलोचना मेरे रूबरू नहीं करनी है, लेकिन आप शुद्धात्मा हो उस वक्त आपके शुद्धात्मा के रूबरू चंदूभाई को आलोचना करनी है। चंदूभाई से कहना है, आलोचना कर लो। फिर प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करवाओ। वह एक-एक घंटा करवाओ। घर के हर एक व्यक्ति का करवाओ। जिनके साथ आपसी संबंध हो, उनके भी करने पड़ते हैं।

जब तक जगत् में कोई भी जीव दोषित दिखाई देता है, तब तक समझना कि अंदर शुद्धिकरण नहीं हुआ है, तब तक इन्द्रिय ज्ञान है। जब घर के लोग निर्दोष दिखाई दें, तब समझना कि आपका प्रतिक्रमण सही है। वास्तव में निर्दोष ही हैं, पूरा जगत् निर्दोष ही है। आप अपने दोष से बंधे हो, उनके दोष से नहीं। आपके खुद के दोष से ही बंधे हो। अब, जब ऐसा समझ में आएगा तब कुछ हल आएगा!

घर के लोगों के भी रोज़ाना प्रतिक्रमण करने चाहिए। आपके मदर, फादर, भाई, बहन, कुटुंबी जनों का, सभी का रोज़ाना प्रतिक्रमण करना

चाहिए। क्योंकि वे आपकी बहुत चीकणी फाइलें हैं। राग-द्वेष वाली हर एक चीकणी 'फाइल' को उपयोगपूर्वक, प्रतिक्रमण करके साफ करना है। राग की फाइल के तो अचूक प्रतिक्रमण करने चाहिए। यदि एक घंटे कुटुंबी जनों के प्रतिक्रमण करोगे न, अपने परिवार वालों को याद करके, नज़दीक से लेकर दूर के सभी, भाईयों, उनकी पत्नियाँ, चाचा, चाचा के बेटे, वे सभी, एक फैमिली (परिवार) हों न, तो दो-तीन-चार पीढ़ियों तक के, उन सभी को याद करके, प्रत्येक के लिए यदि एक-एक घंटा प्रतिक्रमण होगा न, तो भीतर भयंकर पाप भस्मीभूत हो जाएँगे और आपकी ओर से उन लोगों के मन साफ हो जाएँगे। इसलिए आपके सभी नज़दीकी लोगों को याद कर-करके प्रतिक्रमण करने चाहिए। और यदि रात को नींद नहीं आ रही हो तो उस समय यह सेट किया कि चला। ऐसी सेटिंग नहीं करते? ऐसी यह व्यवस्था, वह फिल्म शुरू हो गई तो उस समय बहुत आनंद आएगा। वह आनंद समाएगा नहीं!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, सही बात है।

**दादाश्री :** क्योंकि जब प्रतिक्रमण करते हैं न, तब आत्मा का संपूर्ण शुद्ध उपयोग रहता है। इसलिए बीच में किसी की दखल नहीं होती।

प्रतिक्रमण कौन करता है? चंदूभाई करते हैं। किसके करते हैं? तो कहते हैं, कुटुंबी जनों को याद कर-करके करते हैं। आत्मा देखने वाला है, वह देखता ही रहता है। और कोई दखल है ही नहीं इसलिए बहुत शुद्ध उपयोग रहता है।

आज रात को आपके सभी कुटुंबी जनों के प्रतिक्रमण करना न, यदि टाइम कम पड़ जाए तो कल रात को करना। फिर कम पड़ जाए तो परसों रात को और यहीं तक नहीं, आपके गाँव में जान-पहचान वालों को, सभी को याद करके

( सूत्र-9 )

प्रतिक्रमण करने चाहिए। गाँव में किसी को ज़रा यों धक्का लग गया हो या किसी से आपका मनमुटाव हो गया हो तो वह सारा साफ तो करना पड़ेगा न? सभी हिसाब साफ करने पड़ेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** सामने वाले व्यक्ति को हमारे प्रति चुभन रहती हो तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** तो भी अपने को प्रतिक्रमण करने चाहिए। वह तो हमने पहले भूल की थी इसलिए उन्हें चुभता है, भूल से ही बंधे हुए हैं। बंधन राग का हो, द्वेष का हो, कैसा भी हो, उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। सामने वाला नम्र और सरल हो तो आमने-सामने माफ़ी माँग लेनी चाहिए, वरना यदि भीतर ही माफ़ी माँग लें, तब भी हिसाब साफ हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण से क्या सामने वाले का मन पूरा बदल जाता है?

**दादाश्री :** यदि बाहर के किसी अनजान व्यक्ति के प्रतिक्रमण करोगे तो वह आश्चर्यचकित हो जाएगा! उसे तुरंत ही आपके प्रति खिंचाव हो जाएगा! इस प्रतिक्रमण से तो सामने वाले की वृत्ति ठंडी पड़ जाती है, जबकि घर के लोगों के तो निरंतर प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। हम प्रतिक्रमण करते हैं तो हम उसके बंधन में से छूट सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** कई सालों पहले जो हो चुका हो न, वह हमें याद भी नहीं आ रहा हो तो?

**दादाश्री :** जो याद नहीं आ रहा हो उसका? वह तो रह गया ऐसे का ऐसा ही! वह तो फिर सामायिक करना, उसमें याद आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक में याद आएगा?

**दादाश्री :** हाँ, कई लोगों को तो पाँच साल तक का सब याद आता है।

पहले जहाँ पर राग-द्वेष किए हैं, वहाँ प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे न? और उसे साफ करने में जो आनंद आता है, वैसा अन्य कोई आनंद है ही नहीं।

आपने अपने (परिवार वालों) के प्रतिक्रमण किए थे?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कुछ प्रतिक्रमण नहीं किया है।

**दादाश्री :** उन सब के प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे। तब जाकर, (जो सब) मिलें हैं उसमें से छूट सकते हैं। अब यह प्रतिक्रमण करते वक्त जो आनंद होता है, वह अद्भूत होता है। पहले आपके घर के सदस्यों के, फिर परिजनों के, फिर हर रोज़ आप दोनों की तुलना करते जाओ। दोपहर में जब आराम करते हो न, उस वक्त करते जाओ। एक-एक व्यक्ति का, वे घर के बेटे-वेटे सभी। फिर देखो आनंद! इस तरह से घर वालों के प्रतिक्रमण करो। एक घंटे का प्रयोग रखना है। उस समय का आनंद तो देखना, याद कर-करके!

अपना यह ज्ञान तो देखो, अपना ज्ञान कितना अधिक क्रियाकारी है! यों ही याद नहीं आते लेकिन इस तरह प्रतिक्रमण करने बैठेंगे तो घर के बेटे-वेटे सब दिखाई देते हैं। छोटा बच्चा भी दिखाई देगा!

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने यदि किसी बात पर टोका हो कि रोज़ प्रतिक्रमण करने हैं। फिर किसी दिन नहीं हो पाए, कम हो, यानी हम जो टाइम निकालते हैं, उसमें यदि कम (प्रतिक्रमण) हुए तो अब चुभता है। पहले तो कैसा था कि हो गए अब प्रतिक्रमण, ऐसा होता था।

**दादाश्री :** चुभा यानी समझो कि आप इस (आत्मा) तरफ मुड़े। अब इस तरफ अपना वोटिंग किया।

**प्रश्नकर्ता :** यह प्रतिक्रमण करना, वह अच्छा हो गया है, दादा।

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण तो काम निकाल देता है।

आज रात को पहले नज़दीकी जो लोग हैं न, फादर-मदर से लेकर शुरुआत करनी है। यानी भाई, बहन, चाचा, चाची, मामा, मामी, सब को लेकर आखिर में छोटे से छोटे बच्चे तक सब का प्रतिक्रमण तू कर लेना। घर के सभी सदस्यों का कर लेना। फिर कल वापस विस्तार बढ़ाना है। फिर तो रोज़ विस्तार बढ़ाते जाना है। जान-पहचान वाले, मास्टर सब आ जाएँगे। फिर तेरे साथ के कॉलेज वालों के प्रतिक्रमण करने हैं। सब के साथ का साफ कर देना है। मानसिक संबंध साफ कर देना है। जो कर्म बंध चुके होंगे उन्हें फिर बाद में देख लेंगे।

फिर फ्रेंड सर्कल (मित्र वर्ग) लेना है। फिर दूसरा सर्कल लेना है। काम तो बहुत सारा होता है। ऐसा सेट कर देना है कि किसी जगह पर इतना यह रह गया है, किसी जगह इतना बाकी रह गया है, उनके प्रतिक्रमण करते रहना है। हाँ, नहीं तो मन को क्या काम देंगे? यह जो प्रतिक्रमण करते हैं वह संसार से संबंधित हेतु के लिए नहीं है।

कभी किसी के प्रतिक्रमण करते हो? अभी तक में ये सब सेठ-वेठ, सब से पहचान है न, तो आपके निमित्त से किसी को दुःख पहुँचा हो उसका प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

पहले जहाँ पर राग-द्वेष किए हैं, वहाँ प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे न? और उसे साफ करने में जो आनंद आता है, वैसा कोई आनंद है ही नहीं। जो हो चुके हैं, वे तो अज्ञानता में हो गए लेकिन अब ज्ञान मिलने के बाद भी हम उन्हें न धोएँ और उन कपड़ों को पेटी में ही रखे रखें

तो? आपने तो बहुत से पेटी में रख छोड़े हैं, नहीं? देखना, भीतर दाग लगे होंगे।

(सूत्र-10)

हमें ऐसा लगे कि उसका मुँह फूला हुआ है, तो हमें समझ लेना है कि यह अपना रिएक्शन है। तो क्या करना है? प्रतिक्रमण करना है। दूसरा कोई उपाय नहीं है जगत् में।

**प्रश्नकर्ता :** अकारण किसी को बैर रहे, अकारण कोई द्वेष करे, अकारण कोई कपट करता रहे, तो क्या उसका अर्थ यह हुआ कि किसी जन्म में हमने उसके लिए राग-द्वेष का हिसाब बाँधा है?

**दादाश्री :** हाँ, हमने यह हिसाब बाँधा है। उसी का यह रिएक्शन (प्रतिक्रिया) है।

**प्रश्नकर्ता :** तो वह अपना कौन सा हिसाब है? अपने राग का या द्वेष का?

**दादाश्री :** कपट, वह सारा राग में आ जाता है। अहंकार और क्रोध वाला सब द्वेष में जाता है। कपट और लोभ राग में जाता है, लोभ की इच्छाएँ हुई हों, वे सब राग में जाती हैं। मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह पहुँच रहा है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, पहुँच रहा है।

**दादाश्री :** यह राग कौन सा? तो कहते हैं, लोभ और कपट! और मान व क्रोध, वह द्वेष में गया। यानी कोई कपट करे तो वह राग में गया, राग वाला, जिनके साथ हमें राग होता है न, वहाँ कपट करते रहते हैं।

राग के बगैर तो कोई लाइफ (जिंदगी) गई ही नहीं। जब तक ज्ञान नहीं मिलता, तब तक राग और द्वेष, दोनों ही करता रहता है। तीसरी कोई चीज़ होती ही नहीं।



**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, द्वेष वह तो राग की ही संतान है न?

**दादाश्री :** हाँ, वह उसकी संतान है, लेकिन उसका परिणाम है। संतान यानी उसका परिणाम है, वह राग बहुत हुआ है न! जिस पर राग करते हैं न, यदि वह एक्सेस (ज़रूरत से ज्यादा) बढ़ जाए, तो उस पर ही वापस द्वेष होता है। कोई भी चीज़ उसके प्रमाण से बाहर जाए न, तो हमें नापसंद हो जाती है और नापसंद होना, उसे द्वेष कहते हैं। हमेशा राग कब उत्पन्न होता है? द्वेष में से उत्पन्न हुआ होता है और फिर राग में से वापस द्वेष उत्पन्न होता है। इसलिए सब दोष ही हैं। जहाँ दोष होता है, वहाँ राग-द्वेष होते हैं, वह *चीकणी फाइल* कहलाती है। समझ में आया?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, समझ में आया।

**दादाश्री :** वह तो हमें समझ लेना है कि अपने ही रिएक्शन आए हैं सारे! हम उसे मान से बुलाए और हमें ऐसा लगे कि उसका मुँह फूला हुआ है, तो हमें समझ लेना है कि यह अपना रिएक्शन है। तो क्या करना है? प्रतिक्रमण करने हैं। दूसरा कोई उपाय नहीं है, जगत् में। तब फिर संसार के लोग क्या करते हैं? उल्टा उस पर मुँह फुलाते हैं! यानी फिर वापस वैसे का वैसे ही करते हैं। हम शुद्धात्मा हुए इसलिए उसे मनाकर, अपनी भूल एक्सेप्ट (स्वीकार) करके भी हल ला देते हैं। हम तो ज्ञानी पुरुष होकर भी ऐसी सभी भूलों को एक्सेप्ट करके केस का हल ला देते हैं।

यानी मैंने मनुष्य मात्र के प्रतिक्रमण कर लिए हैं पूरी लाइफ के, सभी को याद कर-करके। उन दिनों तो याददाश्त थी और उसके बाद याददाश्त चली गई। अब राग-द्वेष नहीं हैं न! उन दिनों राग-द्वेष थे। सभी याद आते थे।

**प्रश्नकर्ता :** आपने जो सगे-संबंधियों का

प्रतिक्रमण करने को कहा है तो उन लोगों के साथ..., यानी कि देखते ही रहना है या बोलना है कुछ?

**दादाश्री :** मन में बोलना है।

**प्रश्नकर्ता :** उनके प्रति राग किया हो तो वह भी दोष है, द्वेष किया हो वह भी दोष है, तो उसका प्रतिक्रमण करना है?

**दादाश्री :** सिर्फ राग-द्वेष नहीं, और भी बहुत सी चीज़ें बोलनी पड़ती है। इस जन्म में, संख्यात-असंख्यात जन्मों में राग-द्वेष, अज्ञानता से जो दोष हुए हों, उनके आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करता हूँ। ऐसा बोलना पड़ता है।

**प्रश्नकर्ता :** इस जन्म में, असंख्यात जन्मों से जो कुछ राग-द्वेष हुए हैं उन सब का?

**दादाश्री :** राग-द्वेष, अज्ञानता से जो-जो दोष हुए हों, अगर आक्षेप दिए हों, अहंकार भग्न किए हों, वह सब बोलना पड़ता है। यह सब बोल दिया यानी एक फाइल खत्म हुई। फिर दूसरी फाइल, जैसे डॉक्टर पेशन्ट (मरीज़) को निपटाते हैं न?

हमने तो गाँव वालों के साथ का भी साफ कर दिया। हमारे गाँव में मोहल्ले के हर एक को ढूँढकर साफ कर दिया। नासमझी से दोष ही बाँधे होते हैं। आपने बाँधे थे या नहीं बाँधे थे किसी दिन?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत।

( सूत्र-11 )

सबसे अंतिम वर्तन, किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो ऐसा होना चाहिए। तो अभी दुःख होता है, उसका प्रतिक्रमण करें तो अंतिम दशा आएगी।

**प्रश्नकर्ता :** जब सामने वाला उल्टा बोले तब आपके ज्ञान से समाधान रहता है, लेकिन

मुख्य सवाल यह है कि मुझसे कड़वा निकल जाता है। तो उस वक्त मैं इस वाक्य का आधार लूँ तो मुझे उल्टा लाइसेन्स मिलता है?

**दादाश्री :** इस वाक्य का आधार लेना ही नहीं चाहिए न! उस वक्त के लिए तो आपको प्रतिक्रमण का आधार दिया है। सामने वाले को दुःख पहुँचे, ऐसा बोल दिया हो तो प्रतिक्रमण कर लेना है।

सामने वाला कुछ भी बोले, तब वाणी पर है और पराधीन है, इस बात को स्वीकार कर लिया तो आपको सामने वाले से दुःख ही नहीं रहेगा न!

अब आप खुद उल्टा बोल लेते हो और फिर उसका प्रतिक्रमण कर लेते हो तो खुद के बोल के लिए दुःख नहीं रहेगा। इस तरह से सारा हल आ जाता है। वाणी से जो कुछ बोल लेते हो, उसके आप 'ज्ञाता-द्रष्टा' हो। लेकिन जिसे वाणी से दुःख पहुँचा है, उसका प्रतिक्रमण आपको बोलने वाले से करवाना पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** हम सामने वाले से कुछ कहें, हमारे मन में ऐसा कुछ नहीं होता है, फिर भी हम उसे कहते हैं तो उसे ऐसा लगता है कि 'ये सही नहीं कह रहे हैं, गलत है', तो उसे अतिक्रमण कहेंगे?

**दादाश्री :** लेकिन यदि उसे दुःख हुआ तो आपको प्रतिक्रमण कर लेना है। आपको उसमें क्या मेहनत करनी है? किसी को दुःखी करके हम सुखी नहीं हो सकते।

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार में कई बार ऐसा कहना पड़ता है, करना पड़ता है। वर्ना लेथर्जीपना (आलस) आ जाता है और सामने वाले में भी लेथर्जीपना आ जाता है।

**दादाश्री :** व्यवहार में भले ही ऐसा करो लेकिन आपको प्रतिक्रमण कर लेना है। व्यवहार

तो करना ही पड़ेगा, चारा ही नहीं है न, अनिवार्य है, अनिवार्य व्यवहार है। सारे जगत् ने ऐच्छिक व्यवहार माना है। यह अक्रम विज्ञान ने खुला किया कि 'दिस इज (यह है) अनिवार्य व्यवहार'। और 'हमने' ही ऐसा कहा कि 'इट हैपन्स' (हो रहा है)!

**प्रश्नकर्ता :** यदि प्रतिक्रमण का असर नहीं हो रहा है तो उसका मतलब हमने पूरे भाव से नहीं किया है या सामने वाले व्यक्ति के आवरण है?

**दादाश्री :** सामने वाले व्यक्ति का आपको नहीं देखना है। वह तो पागल भी हो सकता है। हमारे निमित्त से उसे दुःख नहीं होना चाहिए, बस!

**प्रश्नकर्ता :** यानी किसी भी कारण से उसे दुःख हो जाए तो उसका समाधान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

**दादाश्री :** उसे दुःख हो जाए तो समाधान तो अवश्य करना चाहिए। वह अपनी 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' (जिम्मेदारी) है। हाँ, दुःख नहीं हो उसके लिए तो अपनी लाइफ (जिंदगी) है।

### ( सूत्र-12 )

अपने प्रतिक्रमण का तो बहुत असर होता है। एक घंटा यदि करो तो सामने वाले में बदलाव आ जाता है, यदि साफ हुए होंगे तो। उसका हमारे प्रति जो भाव है, वह नरम होता जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हम मन से ऐसी इच्छा करें कि इसके साथ नहीं बोलना है, न ही कोई कलह करनी है, न ही झगड़ा करना है और फिर भी ऐसा कुछ हो जाता है कि वापस झगड़ा हो ही जाता है, बोल ही देते हैं, क्लेश हो जाता है, सबकुछ हो जाता है। तब क्या करूँ कि यह सब रूक जाए?

**दादाश्री :** वह अंतिम स्टेप्स पर है। जब वह रास्ता खत्म होने लगे न, तब आपके भाव नहीं

होने के बावजूद भी यदि गलत हो जाए, तो वहाँ पर फिर आपको क्या करना है कि पश्चाताप करने से धुल जाएगा, बस। गलत हो जाए तो इतना ही उपाय है, अन्य कोई उपाय नहीं है। वह जब खत्म होने लगे तब भीतर बुरा करने का भाव नहीं हो फिर भी बुरा हो जाता है। वह कार्य जब खत्म होने वाला हो तब। नहीं तो अधूरा हो तो भीतर भाव भी होता है और वह कार्य भी हो जाता है, दोनों होते हैं। यदि वह कार्य अभी अधूरा हो, काम बाकी हो, तो करने का भाव भी हो जाता है, आपको उल्टा करने का भाव भी हो जाता है और उल्टा हो भी जाता है। यह उल्टा करने का भाव न हो और उल्टा हो जाए, तो आपको जानना है कि अब इसका अंत निश्चित ही है। उस पर से अंत का पता चलता है। अर्थात् 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट देर शेडोज़ बिफॉर' (कुछ होने वाला हो उसकी गूँज पहले से सुनाई देती है।)

**प्रश्नकर्ता :** मान लो, यदि उसे कुछ कह दूँ तो ऐसा कहा जाएगा न कि मैंने दुःख दिया?

**दादाश्री :** हाँ, वह दुःख तो आपकी इच्छा विरुद्ध हुआ है न, इसलिए आपको प्रतिक्रमण करना है। यही उसका हिसाब होगा इसलिए चुक गया।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हम कुछ कहते हैं तो उसे मन में बुरा भी बहुत लगता है न?

**दादाश्री :** हाँ, वह सब तो बुरा लगेगा। गलत हुआ हो तो गलत लगेगा न! जो हिसाब चुकाना है तो वह चुकाना ही पड़ेगा न! उसमें कोई चारा ही नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** अंकुश नहीं रहता है इसलिए वाणी से निकल जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, वह तो निकल जाता है। लेकिन जो निकल जाता है, उस पर आपको प्रतिक्रमण करना है, बस। दूसरा कुछ नहीं। पश्चाताप

करके और ऐसा फिर कभी नहीं करूँगा, ऐसा निश्चय करना है। यानी इस वाणी से जिन-जिन व्यक्तियों को दुःख पहुँचा है, उन सब से क्षमा माँगता हूँ, इस तरह प्रतिक्रमण कर सकते हैं।

फिर फुरसत में उनके प्रतिक्रमण करते ही रहना है। उससे सब नरम हो जाएँगे। जितनी भी कठिन फाइलें हैं, वे ही नरम करनी है। इतनी कठिन दो-चार फाइलें ही होती हैं। ज्यादा नहीं होतीं न?

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण करते हैं तो सामने वाले को पहुँचता है?

**दादाश्री :** सामने वाले व्यक्ति को पहुँचता है। वह नरम होता जाता है। उसे पता चले या ना चले, उसका हमारे प्रति जो भाव है, वह नरम होता जाता है। अपने प्रतिक्रमण का तो बहुत असर होता है। एक घंटा यदि करो तो सामने वाले में बदलाव आ जाता है, यदि साफ हुए होंगे तो। जहाँ भी हम जिनके प्रतिक्रमण करते हैं तो वे हमारे दोष तो नहीं देखते लेकिन हमारे लिए उन्हें मान होता है।

### ( सूत्र-13 )

अभिप्रायों का प्रतिक्रमण नहीं हो तो सामने वाले पर उसका असर रहा करता है इसलिए उसे आप पर भाव नहीं आता। शुद्ध भाव से रहने पर एक भी कर्म नहीं बंधेगा और यदि प्रतिक्रमण करो तो वह असर भी चला जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** कई बार किसी व्यक्ति को देखकर, उसका बर्ताव देखकर, अभाव हो जाता है।

**दादाश्री :** वह तो पहले की अपनी आदत है न, उस आदत का धक्का अभी भी लगता रहता है न! लेकिन अपना ज्ञान हाज़िर रखना चाहिए न, आदत तो पहले की है इसलिए आती रहेगी।



लेकिन ऐसे करते-करते अपना ज्ञान सेट करेंगे न, तो ऐसा करते-करते स्थिर होता जाएगा। आदतें खत्म हो ही जानी चाहिए न!

**प्रश्नकर्ता :** प्रश्न ऐसा है कि कुछ ही व्यक्तियों के लिए क्यों होता है वह, तिरस्कार वृत्ति या ऐसा जो कुछ होता है, वह?

**दादाश्री :** पूर्व का हिसाब हो, तब आएगा न? लेकिन अब उससे आज लेना-देना नहीं है न! हम उसके शुद्धात्मा ही देखते हैं। उस दिन तो उसके बाहर के पैकिंग पर तिरस्कार था। पैकिंग के साथ हिसाब थे। आज अब उस पैकिंग से कोई लेना-देना नहीं है। उसकी पैकिंग का फल उसे मिलेगा। पहले तो हम ऐसा ही समझते थे कि यही मगनभाई हैं इसलिए हमें तिरस्कार हो जाता था।

**प्रश्नकर्ता :** वह अभिप्राय के आधार पर रहता है न?

**दादाश्री :** ऐसे सब अभिप्राय किए थे, उसके फलस्वरूप यह अभाव रहा करता है। उसका हमें 'प्रतिक्रमण' करके बदल देना है कि सामने वाला व्यक्ति तो बहुत अच्छा है, फिर हमें वह अच्छा दिखेगा।

**प्रश्नकर्ता :** अभिप्राय का प्रतिक्रमण करना है या प्रत्याख्यान करना है?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण करना है। किसी के लिए खराब अभिप्राय बैठा हो, उसे हमें अच्छा बैठाना है कि बहुत भला है। जो खराब लगता हो, उसे अच्छा कहा कि (अभिप्राय) बदल जाता है। पिछले अभिप्रायों के कारण आज वह खराब दिखता है। कोई खराब होता ही नहीं है। खुद के मन को ही कह देना है। अभिप्राय मन ने बनाए हुए हैं। मन के पास *सिलक* (जमापूँजी) है। हम जितने अभिप्राय देते हैं, उन्हें धो डालते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** साधन कौन सा है धोने के लिए?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण। जिन्हें यह अक्रम विज्ञान प्राप्त हो गया है और आत्मा-अनात्मा का भेदज्ञान हो गया है, उन्हें नया कर्म नहीं बंधता। हाँ, अभिप्रायों का प्रतिक्रमण नहीं हो तो सामने वाले पर उसका असर रहा करता है इसलिए उसे आप पर भाव नहीं आता। शुद्ध भाव से रहने पर एक भी कर्म नहीं बंधेगा और यदि प्रतिक्रमण करो तो वह असर भी चला जाएगा। सात से गुणा किया, उसे सात से भाग दिया, वही पुरुषार्थ!

यानी अपने मन की छाया उस पर पड़ती है। हमारे मन की छाया सभी पर किस तरह से पड़ती है! अगर घनचक्कर हो तो वह भी सयाना हो जाता है। अगर आपके मन में ऐसा हो कि, 'मगनभाई' पसंद नहीं है, तो मगनभाई के आने पर अच्छा नहीं लगेगा और उसका फोटो उस पर पड़ेगा। उसके अंदर तुरंत फोटो पड़ जाएगा कि आपके भीतर क्या चल रहा है! आपके भीतर के वे परिणाम सामने वाले को उलझाते हैं। सामने वाले को खुद को पता नहीं चलता, लेकिन उसे उलझाते हैं, इसलिए अपने अभिप्राय तोड़ देने चाहिए। अपने सभी अभिप्राय आपको धो देने चाहिए, तो आप छूट गए। अतः अपना मन बदलता है।

कुछ लोगों की वाणी बहुत बिगड़ी हुई होती है, वह भी अभिप्राय के कारण होता है। यानी जो अभिप्राय भरे हैं, उसका झंझट है। यदि अभिप्राय ही नहीं रखे तो कोई झंझट नहीं होता।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अभी भी तिरस्कार हो जाए तो फिर हम गुनहगार है?

**दादाश्री :** नहीं, गुनहगार नहीं है। देखा व जाना, तो बहुत हो गया कि ये (व्यक्ति) आते हैं, तब इनके लिए तिरस्कार होता है और वे आते हैं, तब जरा भीतर आनंद होता है।

**प्रश्नकर्ता :** तो प्रतिक्रमण करना चाहिए?

**दादाश्री :** यदि सामने वाले को दुःख हो तो प्रतिक्रमण करने हैं। बाकी, विचार आते हैं और जाते हैं, तो उसका प्रतिक्रमण नहीं करना होता। उसके लिए तो ऐसा करना है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। इतना ही बोलें तो बहुत हो गया। प्रतिक्रमण तो कब करना है कि जब कभी गुस्सा निकल जाए या किसी को लग जाए तब हमें प्रतिक्रमण करना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** सामने वाले व्यक्ति को दुःख हुआ है, वह कैसे पता चलता है?

**दादाश्री :** वह तो उसका चेहरा देखने से पता चल जाता है। चेहरे पर से हास्य चला जाता है। उसका चेहरा उतर जाता है। अतः तुरंत पता चलता है न, कि सामने वाले को असर हुआ है। ऐसा पता नहीं चलता?

**प्रश्नकर्ता :** पता चलता है।

**दादाश्री :** मनुष्य में इतनी शक्ति तो होती ही है कि सामने वाले को क्या हुआ, वह पता चल जाता है!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कई ऐसे सयाने होते हैं कि जो चेहरे पर एक्सप्रेशन (हावभाव) नहीं आने देते।

**दादाश्री :** फिर भी खुद को पता चल जाता है कि 'ये भारी शब्द निकल गए हैं मेरे। इसलिए उन्हें लगेंगे तो जरूर'। यानी ऐसा समझकर प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। यदि भारी (शब्द) निकल गए हों तो खुद को पता नहीं चलता कि उन्हें दुःख हुआ होगा?

**प्रश्नकर्ता :** पता चलता है न!

**दादाश्री :** वह भी उसके लिए नहीं करना है। वह तो, अपना अभिप्राय इसमें नहीं है और अपने

अभिप्राय से अलग होने के लिए है। प्रतिक्रमण यानी क्या? वह पहले के अभिप्राय से अलग होने के लिए है और प्रतिक्रमण से क्या होता है कि सामने वाले पर जो असर हो जाता है, वह नहीं होता, बिल्कुल भी नहीं होता। मन में तय करो कि, मुझे समभाव से *निकाल* करना है। तो उस पर असर होता है और उससे उसका मन सुधरता है, यदि आप मन में ऐसा तय करो कि इसे ऐसा कर दूँगा या वैसा कर दूँगा। तो उसके मन में भी वैसा ही रिएक्शन (प्रतिक्रिया) होता है।

**प्रश्नकर्ता :** मन से, वाणी से, वर्तन से, झूठ बोलने से जो सारा दुःख पहुँचा है, उसके लिए यदि आपकी साक्षी में सारे प्रतिक्रमण करेंगे तो वे धुल जाएँगे न?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण किया, ऐसा कब कहा जाएगा, कि आप खुलेआम करो, उनके समक्ष करो या अकेले में करो लेकिन जब प्रतिक्रमण बोले (सामने वाले पर असर होता है) तब समझना कि हमने प्रतिक्रमण किया है। हाँ, हम भी अकेले में प्रतिक्रमण करते हैं, लेकिन वह प्रतिक्रमण तीसरे दिन बोलता है तो मुझे मालूम पड़ता है (कि सामने वाले को असर पहुँचा)। आप मन में ऐसे प्रतिक्रमण करते हो कि उन्हें पता नहीं चलता फिर भी उन्हें आपके प्रति आकर्षण पैदा होता है।

**प्रश्नकर्ता :** इसका मतलब ऐसा है कि प्रतिक्रमण करते रहना है और धीरे-धीरे अपनी सभी आदतें चली जाएँगी?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण से सब चला जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण के पीछे जितना जोरदार भाव होगा, उतना...

**दादाश्री :** नहीं, सच्चे दिल से होना चाहिए। भाव से, शब्द भले ही आएँ या नहीं आएँ, उसमें कोई बात नहीं लेकिन सच्चे दिल से होना चाहिए।

( सूत्र-14 )

भगवान महावीर हिंसक, पीड़ादायक, तिरस्कार और अभाव भाव की चारों सीढ़ियों को पार करके अंतिम 'वीतराग विज्ञान' के 'प्लेटफॉर्म' पर पहुँचे थे!

पूरा संसार चार प्रकार के भावों में खेलता है : 1. हिंसक भाव 2. पीड़ादायक भाव 3. तिरस्कार भाव 4. अभाव भाव। भगवान महावीर ये चारों सीढ़ियाँ पार करके पाँचवीं सीढ़ी पर पहुँचे थे, वह अंतिम, 'वीतराग विज्ञान' का 'प्लेटफॉर्म' है!

हिंसक भाव अर्थात् किसी को भी हिंसा से या किसी भी प्रकार से किंचित्मात्र नुकसान पहुँचाना, किसी पर गुस्सा होना, दुःख देना, पीड़ा देना, ऐसे भाव। वे भाव पहले खत्म हो जाने चाहिए।

हिंसक भाव खत्म होने के बाद पीड़ादायक भाव खत्म होने चाहिए। उच्च जातियों में हिंसक भाव खत्म हो गए हैं लेकिन पीड़ादायक भाव रहे हुए हैं। दिन भर कषाय करते हैं! वे खत्म हो जाने चाहिए।

पीड़ादायक भाव खत्म होने के बाद तिरस्कार भाव खत्म हो जाने चाहिए। अंदर, छुपे तिरस्कार का रहना, सामने वाले की क्रिया पर तिरस्कार होते रहना वगैरह। हमें जिसके प्रति तिरस्कार हो न, उसका हमें भय लगता है। उसे देखते ही घबराहट होती है। यानी जानना है कि यह तिरस्कार है। अतः तिरस्कार छोड़ने के लिए माफी माँगते रहो, दो ही दिन में वह तिरस्कार बंद हो जाएगा। वह नहीं जानता लेकिन आप अंदर माफी माँगते रहो, जिसके प्रति जो-जो दोष किए हों, उसके नाम की, कि 'हे भगवान! मैं क्षमा माँगता हूँ'। यह दोषों का परिणाम है। आपने किसी भी व्यक्ति के प्रति जो-जो दोष किए हों, उसके लिए उसके

भीतर बैठे भगवान से आप माफी माँगते रहो, तो सब धुल जाता है।

तिरस्कार भाव खत्म होने के बाद चौथा, अभाव भाव खत्म हो जाना चाहिए। अभाव भाव यानी खुद के दोष तो खत्म हो चुके होते हैं लेकिन सामने वाले की भूल की वजह से खुद को अभाव होता है। वह कितना बड़ा गुनाह कहा जाएगा। 'महात्मा' चौथी 'स्टेज' में आ जाने चाहिए। अभाव भाव के प्रतिक्रमण करते रहना होगा।

स्वरूप ज्ञान मिलने के बाद किसी पर अभाव भाव होता रहे और भीतर झंझावात जैसा चले, उसमें आक्रामक भाव नहीं होता। वैसे अभावभाव आक्रमण करवाकर नहीं जाते, लेकिन अतिक्रमण करवाकर जाते हैं, इसलिए उनके प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान बाकी रहते हैं। एक ही व्यक्ति के लिए ऐसे अतिक्रमण, ऐसे अभाव भाव हजार-हजार बार भी आ सकते हैं और उसके लिए हजार-हजार बार आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करेंगे तभी ऐसे भारी अतिक्रमण से छूट पाते हैं। इस ज्ञान के बाद अपने में कण मात्र भी अभाव भाव होना ही नहीं चाहिए। अब तो हमें नई लड़ाई नहीं करनी है और जो पुरानी लड़ाई है उसका निकाल ही करना है!

( सूत्र-15 )

किसी को थोड़ी भी तरछोड़ नहीं लगे, वैसा अपना जीवन होना चाहिए। उसके लिए दूसरा कोई उपाय नहीं है। सिर्फ प्रतिक्रमण ही करते रहना है। जब तक सामने वाले का मन वापस नहीं पलटे, तब तक करना।

किसी को थोड़ी भी तरछोड़ (तिरस्कारपूर्वक दुत्कारना) नहीं लगे, वैसा अपना जीवन होना चाहिए। आप तरछोड़ को पहचानते हो या नहीं पहचानते? बहुत पहचानते हो? अच्छी तरह? किसी को ( तरछोड़ ) लग जाती है क्या?



**प्रश्नकर्ता :** भीतर में सूक्ष्म रूप से लग जाती है।

**दादाश्री :** वह सूक्ष्म लगे उसमें हर्ज नहीं है। सूक्ष्म लगे, वह तो हमें नुकसानदेह है। हालाँकि सामने वाले के लिए भी विरोधक तो है ही। क्योंकि सामने वाला एकता अनुभव नहीं करेगा।

**प्रश्नकर्ता :** मान लो कि स्थूल तरछोड़ लग गई तो भी प्रतिक्रमण तुरंत ही हो जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, तरछोड़ लग जाए तो फिर प्रतिक्रमण करने चाहिए। और दूसरा, फिर बाद में उसके साथ अच्छा बोलकर बात पलट देनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तिरस्कार और तरछोड़ हैं, वे जीवन व्यवहार में हर पल अनुभव में आते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, हर एक को यही हो रहा है न! जगत् में दुःख ही उसके हैं। उल्टी वाणी तो ऐसी निकलती है, 'अकाल पड़े', ऐसा बोलता है!

**प्रश्नकर्ता :** उल्टी वाणी के तो आजकल राजा होते हैं।

**दादाश्री :** हमें पिछले जन्मों के तरछोड़ का परिणाम दिखता है। इसलिए तो मैं कहता हूँ कि किसी को तरछोड़ न लगे, मज्जदूर को भी तरछोड़ न लगे। अरे! अंत में साँप बनकर भी बदला लेते हैं। तरछोड़ छोड़ता नहीं है, सिर्फ प्रतिक्रमण बचाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** क्या उपाय करूँ कि जिससे तरछोड़ के परिणाम भुगतने की बारी नहीं आए?

**दादाश्री :** उसके लिए दूसरा कोई उपाय नहीं है, सिर्फ प्रतिक्रमण ही करते रहना है। जब तक सामने वाले का मन वापस नहीं पलटे, तब तक करना। और प्रत्यक्ष मिल जाएँ, तो फिर वापस मीठा बोलकर क्षमा माँग लेना कि, 'भाई, मेरी

तो बहुत भूल हो गई। मैं तो मूर्ख हूँ, बेअकल हूँ।' इससे सामने वाले के घाव भरते जाएँगे। हम अपने आप को बुरा-भला कहें तो सामने वाले को अच्छा लगता है, तब उसके घाव भर जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** पैरों में गिरकर भी माफी माँग लेनी चाहिए।

**दादाश्री :** नहीं। पैरों में पड़े तो गुनाह होगा। ऐसा नहीं, दूसरे प्रकार की वाणी से पलट दो। वाणी से घाव हुआ हो न, तो वाणी से पलट दो। पैरों में गिरने से तो वापस वह उल्टा चला हुआ व्यक्ति उस समय मन में उल्टा ही समझेगा। इसलिए वाणी से ही बदलो उसे, ताकि उस बेचारे को संतोष हो जाए। ऐसी मीठी वाणी से उसे बदलो, कि फिर से वह सही हो जाए। फिर वह तुरंत हस्ताक्षर कर देगा। अभी हुआ और अभी ही हस्ताक्षर कर देगा। फिर उससे एकता नहीं टूटेगी। मुझे बहुत तरह के लोग मिलते हैं लेकिन मैं उनके साथ एकता नहीं टूटने देता।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो ग़ज़ब की बात है!

**दादाश्री :** मैं एकता नहीं टूटने देता, बेचारे की। एकता टूटे तो फिर उसकी शक्ति नहीं रहेगी। जब तक मेरी एकता है, तब तक उसकी शक्ति है। इसलिए संभालना पड़ता है। हम जिस प्रयोगशाला में बैठे हैं, वहाँ प्रयोग सारे देखने पड़ते हैं न!

( सूत्र-16 )

**प्रतिक्रमण मोक्ष में ले जाने के लिए नहीं हैं, लेकिन वह तो बैर रोकने के लिए भगवान के वहाँ का फोन है। प्रतिक्रमण में कच्चे पड़े तो बैर बंधेगा। भगवान महावीर का पूरा सिद्धांत प्रतिक्रमण पर ही कायम है।**

यह जगत् किससे खड़ा है? बैर से। यदि बैरभाव गया तो सबकुछ गया। इसलिए हम समभाव

से फाइलों का *निकाल* करने को कहते हैं। ऐसे *निकाल* करने से पुराने बैर का निकाल हो जाता है। बाद में नया बैर मत बाँधना। यह समभाव से *निकाल* करने का नियम क्या कहता है, तू किसी भी तरह से उसके साथ बैर नहीं बंधे, इस प्रकार से *निकाल* कर दे! बैर से मुक्त हो जा!

सामने वाले का दोष देखना ही नहीं, दोष देखने से तो संसार बिगड़ जाएगा। खुद के ही दोष देखते रहने चाहिए। प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है? खुद के दोष देखना। यदि औरों के दोष देखोगे तो फिर सब आगे ही आगे चलेगा। अतः औरों के दोष देखने ही नहीं है, तभी बैर छूटेगा।

अपने ही कर्म के उदय का फल है यह! इसलिए किसी से कुछ कहने का ही नहीं रहा न! ये तो सब अन्योन्य दोष देते हैं कि 'आप ऐसे हो, आप वैसे हो' और साथ में बैठकर टेबल पर भोजन करते हैं। ऐसे अंदर बैर बंधता है, इसीलिए तो हमने कहा है कि 'समभाव से *निकाल* करना'। उससे बैर बंद होते हैं। बैर नहीं बाँधना और पुराने बैर का *निकाल* करना। यदि आपको कुछ पुरुषार्थ करना नहीं आए तो आखिर में इतना करना; बैर का *निकाल* करना। किसी से बैर बंध गया हो, तो हमें पता चलता है न, कि इसके प्रति बैर ही है? मैं उसे परेशान नहीं करता, फिर भी वह मुझे परेशान करता रहता है। यानी कि उसके साथ बैर बंधा है। ऐसा पता चले तो उसके साथ *निकाल* करना। और उस बैर का *निकाल* हो गया तो, उसे सब से बड़ा पुरुषार्थ कहा जाएगा।

भगवान ने कहा था कि इस जन्म में तू नया बैर मत बढ़ाना और पुराना बैर छोड़ देना। पुराना बैर छोड़ दें तो कैसी शांति लगती है न! वर्ना लोग तो पहले (के समय में) मूछें मरोड़ते जाते थे और बैर बढ़ाते जाते थे। लेकिन अब बैर नहीं बढ़ाना है, दिनोंदिन बैर कम करना है।

प्रतिक्रमण मोक्ष में ले जाने के लिए नहीं हैं, लेकिन वह तो बैर रोकने के लिए भगवान के वहाँ का फोन है। प्रतिक्रमण में कच्चे पड़े तो बैर बंधेगा। जब भूल समझ में आए, तब तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लो। उससे बैर बंधेगा ही नहीं। सामने वाले को बैर बाँधना हो तब भी नहीं बंधेगा। क्योंकि हम सामने वाले के आत्मा को सीधे ही फोन पहुँचा देते हैं। व्यवहार निरुपाय है। सिर्फ, आपको मोक्ष में जाना हो तो प्रतिक्रमण करो। जिसे स्वरूप ज्ञान नहीं हो, उसे व्यवहार को व्यवहार स्वरूप ही रखना हो तो सामने वाला उल्टा बोला वही करेक्ट है, ऐसा ही रखो। लेकिन मोक्ष में जाना हो तो उसके लिए प्रतिक्रमण करो, नहीं तो बैर बंधेगा।

प्रतिक्रमण कर लिए तो चाहे कितना भी बैर हो तो भी छूट जाता है इस जन्म में ही! यही एक उपाय है। भगवान महावीर का पूरा सिद्धांत प्रतिक्रमण पर ही कायम है।

### ( सूत्र-17 )

हम प्रतिक्रमण करेंगे तो हम छूट गए। उन्हें छूटना है या नहीं छूटना, वह उनकी मर्जी की बात है, हम छूट गए। जिसे छूटना है, उसे कोई बाँधने वाला नहीं है। भगवान महावीर पर भी लोग प्रेम बरसाते थे, उससे कहीं महावीर बंध नहीं जाते। वीतराग को कुछ नहीं चिपकता। वीतराग यानी शरीर पर बिना तेल लगाए बाहर घूमते हैं।

प्रश्नकर्ता : हम प्रतिक्रमण करके बैर छोड़ दें किन्तु सामने वाला बैर रखे तो ?

दादाश्री : भगवान महावीर पर कई लोग राग करते थे और कई लोग द्वेष भी करते थे, उससे महावीर को क्या? वीतराग को कुछ नहीं चिपकता। वीतराग यानी शरीर पर बिना तेल लगाए बाहर घूमते हैं और वे (लोग) शरीर पर तेल

लगाकर बाहर घूमते हैं। तो तेल वाले को सारी धूल चिपकेगी। आज्ञा में रहना है न आपको? तो आपको नहीं चिपकेगी। इसलिए आज्ञा में रहना है। तेल लगाओगे तो चिपकेगी न!

देह रूपी जो चिपचिपाहट है, उसे तेल कहते हैं। देह रूपी चिपचिपाहट की वजह से उसे यह धूल चिपकेगी। यदि वह चिपचिपाहट ही नहीं है, तो वह कैसे चिपकेगी? मुझ पर भी राग-द्वेष करते रहते हैं लोग। तारीफ भी करते हैं और किसी को पसंद न आए तो भीतर गाली भी देते हैं, टेढ़ा भी बोलते हैं क्योंकि स्वतंत्र है। अधोगति में जाने की ज़िम्मेदारी उसकी खुद की है। खुद की ज़िम्मेदारी पर मनुष्य जो चाहे करे। हम मना कैसे कर सकते हैं? दूसरों को मार भी देते हैं! क्या नहीं करते? नासमझी से क्या नहीं करते? और समझदार तो नाम तक नहीं लेते। वकील होता है वह गुनाह करने से डरता है या नहीं डरता?

**प्रश्नकर्ता :** यानी राग-द्वेष जो होते हैं वे व्यक्तिलक्षी होते हैं?

**दादाश्री :** खुद के ही होते हैं। खुद ही चीकणा (गाढ़) करता है, तेल चुपड़कर करता है, उसमें हमें क्या?

फिर भी इतना है कि हमारे घर का कोई व्यक्ति हो, तो उसके लिए चंदूभाई से कहना है कि, 'भाई, प्रतिक्रमण करते रहो।' पहले का आमने-सामने का घर्षण है, और वह घर्षण परिणाम है, यह अहंकार परिणाम नहीं है। यह अज्ञान परिणाम नहीं है। यानी हमें इतना कहना है कि पहले का है, उसका प्रतिक्रमण करो।

इस जगत् में बैर से घर्षण होता है। संसार का मूल बीज बैर है। जिसके बैर और घर्षण, दोनों बंद हो गए उसका मोक्ष हो गया! प्रेम बाधक नहीं है, बैर जाए तब प्रेम उत्पन्न होता है।

**प्रश्नकर्ता :** अब दो लोगों के बीच जो बैर बंधता है, राग-द्वेष होते हैं, यदि उसमें मैं प्रतिक्रमण करके छूट जाऊँ लेकिन यदि वह व्यक्ति बैर नहीं छोड़े, तो क्या अगले जन्म में वह राग-द्वेष का हिसाब चुकाएगा? क्योंकि उसने तो बैर रखा हुआ ही है न?

**दादाश्री :** ठीक है। उसे हमसे अधिक मात्रा में दुःख हुआ हो, अतः हम उसके दुःख को भूल जाते हैं, लेकिन यदि वह अपना अगले जन्म तक नहीं भूलता है तो हमें ही प्रतिक्रमण करना पड़ता है। जितना अधिक मात्रा में हो उतना, समझ में आया न?

**प्रश्नकर्ता :** वह बैर छूट जाए तो क्या ऐसा कह सकते हैं कि हमारे प्रतिक्रमण की इफेक्टिवनेस (असर) है?

**दादाश्री :** हाँ, प्रतिक्रमण से उसका बैर कम हो जाएगा। एक बार में एक प्याज़ की एक परत गई, दूसरी परत, उसकी जितनी परतें होंगी उतनी जाएगी। समझ में आया न आपको?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। भगवान महावीर पर बहुत से लोग राग-द्वेष करते थे लेकिन उन्हें नहीं छूटा था।

**दादाश्री :** अरे, बेहिसाब राग-द्वेष करते थे, मारते तक थे। मारते भी थे और राग भी करते थे। उन्हें उठाकर ले जाते थे।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उन्हें असर नहीं होता था।

**दादाश्री :** उनका तो इसमें उपयोग ही नहीं था न! इस देह में उपयोग ही नहीं था न! इस देह को जो करना है करो। देह का मालिकपना ही नहीं था, उसमें उपयोग नहीं था। भीतर मालिकपना तो नहीं था लेकिन उपयोग भी नहीं था।

इस टेबल को यदि तू ऐसे तोड़ डाले, मारे तो उसे (टेबल को) कोई लेना-देना नहीं है, 'यू

आर रिस्पॉन्सिबल' (तू जिम्मेदार है)। उसी तरह यह देह उन्हें इसके जैसे अलग दिखा था!

'स्मृति' में नहीं लाना है फिर भी आ जाता है, वह 'प्रतिक्रमण दोष' बाकी है, इसलिए।

### ( सूत्र-18 )

जैसे-जैसे प्रतिक्रमण होते जाएँगे न, वैसे-वैसे सब हल्का होता जाएगा। एक व्यक्ति के साथ आपको बिल्कुल रास नहीं आता है, उसका यदि आप पूरे दिन प्रतिक्रमण करो, दो-चार दिन तक करते रहो तो पाँचवें दिन तो आपको खोजता हुआ यहाँ आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण करने से कैसी भी दुश्मनी हो, बैरभाव हो या तेजोद्वेष हो तो वह सब पिघल सकता है क्या?

**दादाश्री :** अतिक्रमण से यह जगत् खड़ा हुआ है। सर्व दुर्गुण वगैरह सब अतिक्रमण से हुआ है और प्रतिक्रमण से सब धुल जाता है। दो ही चीजें हैं ये।

**प्रश्नकर्ता :** उसके हृदय का परिवर्तन हो जाता है ?

**दादाश्री :** संपूर्णतः हृदय का परिवर्तन हो जाता है और वे आपको घर बैठे ढूँढने आएँगे। सब बदलाव हो जाता है। एक व्यक्ति के साथ आपको बिल्कुल रास नहीं आता हो, उसका यदि आप पूरे दिन प्रतिक्रमण करो, दो-चार दिन तक करते रहो तो पाँचवें दिन तो आपको खोजता हुआ यहाँ आएगा। आपके अतिक्रमण दोषों से ही यह सब रूका है।

जैसे-जैसे प्रतिक्रमण होते जाएँगे न, वैसे-वैसे उन लोगों के साथ सब हल्का होता जाएगा। उन लोगों के साथ संबंध बिल्कुल क्लियर हो जाएँगे।

### ( सूत्र-19 )

प्रतिक्रमण करने को पुरुषार्थ कहते हैं। अंत में प्रतिक्रमण करते-करते शब्दों का पूरा जंजाल कम होता जाएगा, सब कम होता जाएगा अपने आप।

ज्ञान मिलने के बाद राग-द्वेष नहीं रहते और यदि रहते हैं तो उसका गुनाह हमें लगेगा। लेकिन वह डिस्चार्ज द्वेष है। इसलिए बड़ा गुनाह नहीं लगता।

कोई भी क्रिया राग से होती है या द्वेष से होती है। ज्ञान के बाद राग-द्वेष नहीं होते। जहाँ पर राग-द्वेष नहीं हैं, वहाँ पर पुद्गल आमने-सामने टकराते हैं। उसे देखें, ज्ञाता-द्रष्टा रहे, वह आत्मा! उसमें यदि तन्मयाकार हो जाएगा तो मार खाएगा। तन्मयाकार कब होता है कि उसमें बहुत गहरे उतर जाए तो तन्मयाकार हो जाता है लेकिन फिर आपको चंदूभाई से प्रतिक्रमण करने को कहना है, ताकि सब साफ हो जाए।

गुस्से का ज्ञाता-द्रष्टा रहने पर गुस्सा साफ होकर चला जाएगा, वे परमाणु शुद्ध होकर चले जाएँगे। उतना ही आपका फर्ज है।

**प्रश्नकर्ता :** गुस्सा हो जाने के बाद प्रतिक्रमण करें तो वह पुरुषार्थ कहलाएगा या पराक्रम कहलाएगा ?

**दादाश्री :** उसे पुरुषार्थ कहेंगे, पराक्रम नहीं कहेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर पराक्रम किसे कहेंगे ?

**दादाश्री :** पराक्रम तो पुरुषार्थ से भी आगे है। यह पराक्रम नहीं है। यह तो, जलन होती है इसलिए दवाई लगाते हैं, उसमें पराक्रम कहाँ है ? जब इन सब को जाने और उस जानने वाले को भी जाने तब उसे पराक्रम कहते हैं। और



प्रतिक्रमण करने को पुरुषार्थ कहते हैं। अंत में प्रतिक्रमण करते-करते शब्दों का पूरा जंजाल कम होता जाएगा, सब कम होता जाएगा अपने आप। नियम से ही सब कम होता जाएगा। कुदरती रूप से सब बंद हो जाएगा। सब से पहले अहंकार जाएगा, बाद में बाकी का सब जाएगा। सब चले जाएँगे अपने-अपने घर। अंदर टंडक है। अब अंदर टंडक है न?

**प्रश्नकर्ता :** बिल्कुल, दादा।

**दादाश्री :** हाँ, तो बस। यही चाहिए हमें।

( सूत्र-20 )

**ज्ञानी पुरुष की आज्ञा से यह प्रतिक्रमण होता है, अनंत जन्मों के पापों को वह जला देता है। यह प्रतिक्रमण तो कैसा प्रतिक्रमण है, सारे बैर छूट जाते हैं। औरंगाबाद में हम साल में एक बार समूह में ऐसा प्रतिक्रमण करवाते हैं, वह तो आश्चर्य ही कहलाएगा न!**

ज्ञानी पुरुष की आज्ञा से यह प्रतिक्रमण होता है, अनंत जन्मों के पापों को वह जला देता है। यह प्रतिक्रमण तो कैसा प्रतिक्रमण है? सारे बैर छूट जाते हैं। क्योंकि सहाध्यायियों से ही ज्यादा बैर बंधे हुए होते हैं। वर्ल्ड (दुनिया) में औरों के प्रति बैर नहीं होता कभी भी और सहाध्यायी तो हर वक्त याद रहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** सत्युग में भी सहाध्यायी के प्रति बैर बंधता था?

**दादाश्री :** नहीं, तब बैर नहीं बंधता था। वह समझ ही ऊँची थी सब की। और वह सब चीकणा (गाढ़) प्रेम!

**प्रश्नकर्ता :** सहाध्यायी से बैर बाँधने का कारण क्या?

**दादाश्री :** नासमझी से। सत्युग में ऐसा-

वैसा नहीं होता। चोर वह चोर, जो लुच्चा वह लुच्चा और साहूकार वह साहूकार। यह दुनिया कभी चोर रहित रही ही नहीं है। लेकिन सत्युग में उनकी बस्ती कम रहती थी।

जो अपने साथ हो, पहले भी थे और आज भी हैं, वे अपने धर्मबंधु कहलाते हैं और खुद के धर्मबंधुओं से ही जन्मों जन्म के बैर बंधे होते हैं। यदि उनके साथ कुछ बैर बंधा हुआ होगा तो, उसके लिए आप आमने-सामने प्रतिक्रमण कर लो तो हिसाब सब खत्म हो जाएगा। एक भी व्यक्ति का आमने-सामने प्रतिक्रमण करना चूकना मत। सहाध्यायियों से ही ज्यादा बैर बंधता है और उनके प्रत्यक्ष प्रतिक्रमण करने से वह धुल जाएगा। औरंगाबाद में जो प्रतिक्रमण करवाते हैं, ऐसे प्रतिक्रमण तो वर्ल्ड में कहीं भी नहीं होते।

हम कहीं और ऐसी विधि नहीं करते। औरंगाबाद में हम ऐसी विधि करते हैं कि अनंत जन्मों के दोष धुल जाते हैं। एक घंटे की प्रतिक्रमण विधि में तो सभी का अहंकार भस्मीभूत हो जाता है! हम वहाँ औरंगाबाद में तो बारह महीनों में एक बार प्रतिक्रमण करवाते थे। तब दो सौ-तीन सौ लोगों का रोना-धोना चलता और सभी रोग निकल जाते थे। क्योंकि पति अपनी पत्नी के पैर छूकर, वहाँ पर माफी माँगता था। कितने ही जन्मों का बंधन है, जब उसके लिए माफी माँगता है, तब कितना कुछ साफ हो जाता है!

वहाँ हर साल, हमें बहुत बड़ी विधि करनी पड़ती है, सभी के मन शुद्ध करने के लिए, आत्मा (व्यवहार आत्मा) शुद्ध करने के लिए। बड़ी विधि करके और फिर रख देते हैं ताकि सब के मन साफ हो जाए उस घड़ी, कम्प्लीट क्लियर, खुद को भी पता नहीं रहता है कि मैं क्या लिख रहा हूँ, लेकिन सब स्पष्ट लिखकर लाते हैं। फिर 'क्लियर' हो जाता है। अभेदभाव उत्पन्न हुआ

न, एक मिनट भी मुझे सौंप दिया कि मैं ऐसा हूँ साहब, वह अभेदभाव हो गया, उतनी उसकी शक्ति बढ़ गई।

और फिर मैं तेरे दोषों को जानता हूँ और दोषों पर विधि करता रहता हूँ। यह कलियुग है! कलियुग में क्या-क्या दोष नहीं होते होंगे? किसी का दोष निकालना, वही भूल है। कलियुग में किसी का दोष निकालना, वही खुद की भूल है। किसी का दोष नहीं निकालना है। कौन से गुण हैं, वह देखने की जरूरत है। क्या बचा है उसके पास? कितनी पूँजी बची है, वह देखने की जरूरत है। इस काल में पूँजी ही नहीं रहती न! जिनकी पूँजी बची है, वही महात्मा आगे हैं न!

औरंगाबाद में हम साल में एक बार समूह में ऐसा प्रतिक्रमण करवाते हैं। वह तो आश्चर्य ही कहलाएगा न! यह अपना प्रतिक्रमण हुआ, वह तो दुनिया का सब से बड़ा आश्चर्य है!

इससे तो बहुत शक्ति बढ़ती है। यह तो निरा शक्ति का ही कारखाना है। उस समय हम इतनी बड़ी विधि करके रखते हैं कि व्यक्ति में निरी शक्तियाँ ही उत्पन्न होती हैं। वर्ना ये वकील क्या ऐसे-वैसे व्यक्ति हैं? कहेंगे, मर जाऊँगा लेकिन किसी के पैर नहीं छूँगा। ऐसे शूरवीर (!) व्यक्ति। लेकिन एक बार उनमें वह शक्ति उत्पन्न हुई थी, जब औरंगाबाद में प्रतिक्रमण करवाया था तब अच्छी शक्ति उत्पन्न हुई थी। और वे समझ गए कि इससे मुझे लाभ है। शक्ति उत्पन्न होती है, जबरदस्त! सारी निर्बलता चली जाती है।

### ( सूत्र-21 )

यह चेतन वाणी है। यह चेतन वाणी ही काम करेगी! बैठकर शुद्धतापूर्वक प्रतिक्रमण शुरू कर दो। यह 'दादा' की आज्ञा हुई है, उसका पालन करना!

सब से पहले दादा का ध्यान लगाकर, स्मरण करके, एकाध पद पढ़कर और फिर त्रिमंत्र बोलकर, फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की स्थिरता कर लेना। फिर आज से लेकर बचपन तक की जो-जो घटनाएँ हुई हों, विषय-विकारी या हिंसा की घटनाएँ, झूठ-प्रपंच किए हों, वह सब जितना आपको दिखाई दें, उन सभी के प्रतिक्रमण करने की आप शुरुआत करना। आज से पीछे की ओर चलना है, बचपन से लेकर याद करना है या फिर कल किसके साथ क्या किया था, परसों किसके साथ किया था, नरसों किसके साथ किया था, जितना भी याद आए न, उनके प्रतिक्रमण करने हैं। वह याद आएगा, कुदरती रूप से ही याद आएगा। आपको ऐसा घबरा नहीं जाना है कि याद नहीं आए तो क्या करेंगे। आप शुरू करोगे कि मूसलाधार बरसात होगी! रेगिस्तान में भी बरसात होगी! और फिर जहाँ पर हिंसा जैसे दोष किए होंगे, अगर तो वाणी से हिंसा की होगी, या फिर कपट किए होंगे, कुछ लोभ किया होगा, मान किया होगा, धर्म में विराधना की होगी तो उन सब का प्रतिक्रमण करते-करते आगे जाना है! फिर अब्रह्मचर्य से संबंधित, अणहक्क (बिना हक़ का) के भोग भोगे हों या वैसा सोचा भी हो, उन सब को भी याद करके धोते रहना! जगत् जिसकी निंदा करे, जो निंदनीय हों उसके फलस्वरूप नर्क के अधिकारी बन जाते हैं! अतः उन सब का प्रतिक्रमण कर लेना।

यह चेतन वाणी है! यह चेतन वाणी ही काम करेगी! बैठकर शुद्धतापूर्वक प्रतिक्रमण शुरू कर दो। पाँच महाव्रत हैं। उन महाव्रतों का कहाँ-कहाँ भंग हुआ, उसी का करना है, और कुछ नहीं करना है। बाकी, घूमे हों, फिरे हों, पान खाया हो, उसका नहीं करना है। मनुष्य से मनुष्य के प्रति आमने-सामने जो दोष हुए हों, उनके प्रतिक्रमण

करने हैं। यानी कि मिश्रचेतन के प्रति जो दोष हुए हों, उन दोषों के लिए प्रतिक्रमण करने को कहता हूँ। यानी आप मिश्रचेतन के प्रति जो-जो दोष हुए हों, उनके प्रतिक्रमण करना। यह 'दादा' की आज्ञा हुई है, उसका पालन करना। ऐसे तो रोज़ प्रतिक्रमण करते रहते हैं। किसी मिश्रचेतन के प्रति विषय का विचार आया हो, कोई दोष किए हों, उन सभी का बचपन से लेकर अभी तक का याद कर-करके प्रतिक्रमण करना है। यह प्रतिक्रमण आज्ञासहित है इसलिए सब धुल जाएगा। मनुष्य से कौन सा आचार नहीं हो सकता? लेकिन आज्ञा का पालन किया तो स्वच्छ हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** मिश्रचेतन में क्या-क्या आता है ?

**दादाश्री :** मिश्रचेतन यानी यदि कुत्ते को लात मारकर निकाल दिया हो, तो उसके साथ बैर बाँधा कहलाएगा। रास्ते पर किसी स्त्री को धक्का मारा हो तो उसे भी मिश्रचेतन के प्रति हुआ दोष कहा जाएगा। मिश्रचेतन के प्रति हुए ऐसे एक-एक दोष को याद करके, एक-एक दोष को ढूँढकर आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान करना। ज्ञानी पुरुष की आज्ञा में रहने से दोषों के ओपरेशन होते जाते हैं। यह तो 'लिफ्ट' मार्ग है! रास्ते चलते यह मार्ग मिल गया है न! अतः इस तरह से आज्ञा में रहने से माल स्वच्छ होता जाएगा। ऐसा करते-करते मोक्ष में जा पाओगे!

**प्रश्नकर्ता :** गलतियाँ पता नहीं चलें तो ?

**दादाश्री :** तो दादा को याद करके कहना, 'हे दादा भगवान, अब याद नहीं आ रहा है।' तो वापस याद आने लगेगा और जितने दोष दिखाई दिए उतने दोष खत्म हो जाएँगे। अब सुख खुद के भीतर शुरू हो गया है, लेकिन पहले के मिश्रचेतन के साथ के जो हिसाब बाकी होंगे, वे दावा करेंगे। ऐसे मार खाकर सीधा होने के

बजाय मिश्रचेतन के प्रति हुए दोषों के लिए माफी ही माँगते रहो तो हल्के हो जाओगे। बच्चों के प्रति, पत्नी के प्रति, फादर-मदर वगैरह, वे सब मिश्रचेतन ही कहलाते हैं। उन सब के प्रतिक्रमण करने हैं। आज्ञा के पीछे ज्ञानी पुरुष का वचनबल काम करता है! इसलिए काम निकल जाता है!

( सूत्र-22 )

हमने आपको ज्ञान तो दिया है, लेकिन उसे आप खो बैठोगे। इसलिए ये पाँच आज्ञा देते हैं, कि यदि इन पाँच आज्ञा में रहोगे तो मोक्ष जाओगे और छठवाँ क्या कहा? कि जहाँ अतिक्रमण हो जाए, वहाँ प्रतिक्रमण करो।

पाँच आज्ञा में ही ज्यादा रहना है। दूसरा कुछ करने जैसा नहीं है। सुबह से निश्चय करना है कि पाँच आज्ञा में ही रहना है और फिर नहीं रह पाए तो रात को प्रतिक्रमण कर लेना। ताकि दूसरे दिन रहा जा सके। बाद में आगे फोर्स बढ़ता जाएगा। उसके लिए दूसरे कोई पंप नहीं होते, यही पंप है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, प्रतिक्रमण का पंप।

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण का पंप। इसलिए मैंने क्या नियम बनाया कि भाई, आपसे जितनी आज्ञाओं का पालन हो पाए उतनी पालन करना। आपसे पालन न हो सके तो दादा से क्षमा माँगना कि दादाजी, जितनी पालन हो सके उतनी पालन करता हूँ और जितनी पालन नहीं कर पाया उसके लिए मैं क्या कर सकता हूँ? इसलिए आपसे क्षमा माँगता हूँ। तो आपकी सारी आज्ञाएँ पूरी हो गईं। लेकिन यह जान-बूझकर धकेलने के लिए नहीं करना।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ठीक है।

**दादाश्री :** हार्टिली यदि आपसे नहीं हो पाए तो आप इस तरह से करो, तो फिर मैं ऐसा

स्वीकार लूँगा कि हमारी सभी आज्ञाओं का पालन करते हो।

क्योंकि मनुष्य कितना कर सकता है? जितना हो सके उतना करेंगे। और बाकी के लिए माफी माँग लेंगे, बाद में तो मैं उसका सब भगवान से कह दूँगा न, कि इसमें क्या हर्ज है? आपकी आज्ञा में ही हैं। यदि पालन नहीं कर पाए तो वे क्या कर सकते हैं?

यानी अपने तो सभी नियम बहुत सुंदर हैं! प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। और वह प्रतिक्रमण आपको आगे ले जाएगा, टॉप पर, उसके द्वारा आगे बढ़ सकते हैं।

अपने पास जो रास्ते हैं, उनमें रहने की ज़रूरत है, टेन्शन (चिंता) रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसमें कोई नुकसान नहीं होगा। रास्ते को पकड़ने की ज़रूरत है, ज्ञान ही पकड़ने की ज़रूरत है।

हमने आपको ज्ञान तो दिया है, लेकिन उसे आप खो बैठोगे। इसलिए ये पाँच आज्ञा देते हैं, इन पाँच आज्ञा में रहोगे तो मोक्ष जाओगे और छठवाँ क्या कहा? कि जहाँ अतिक्रमण हो जाए, वहाँ प्रतिक्रमण करो। आज्ञा का पालन करना भूल जाओ तो प्रतिक्रमण करना। भूल तो हो सकती है, मनुष्य है। लेकिन भूल गए उसका प्रतिक्रमण करना है कि, 'हे दादा, ये दो घंटे मैं आपकी आज्ञा भूल गया लेकिन मुझे तो आज्ञा का पालन करना है। मुझे माफ कर दीजिए'। तो पिछला सबकुछ पास। सौ में से सौ मार्क्स पूरे! यानी ज़िम्मेदारी नहीं रही। फिर से भूल करने की जिसकी इच्छा नहीं है, उसे हम माफ कर देते हैं। माफ करने का हमारे पास लाइसेन्स है।

हमारी आज्ञा में रहोगे तो काम बन जाएगा और यदि उसे बार-बार उलट-पुलट करके गाढ़ (चीकणा) करोगे तो क्या होगा?

आज्ञा में नहीं रह पाते तो प्रतिक्रमण करना पड़ता है। घर से निश्चय करके निकलना है कि आज्ञा में ही रहना है। फिर यदि नहीं रह पाए तो तुरंत प्रतिक्रमण करना है। ऐसा करते-करते छः महीने, बारह महीने में भी सही हो जाएगा। फिर हमेशा के लिए सही हो जाएगा।

ट्रेन में बैठे हो, टैक्सी में बैठे हो, वे सभी मुक्त ही हैं न! बैठने वाले को क्या? इधर-उधर देखता है, तांक-झांक करता है, ऐसे विचार आते हैं! (वास्तव में) शुद्ध उपयोग नहीं चूकना चाहिए। पैसे गिनते समय क्यों नहीं चूकते? क्योंकि जरा सा भी इधर-उधर नहीं देखते। अभी यदि हजार-हजार की नोटें हों न, तो इधर-उधर नहीं देखेंगे। तो यह तो उससे भी कीमती, आत्मा जैसी वस्तु प्राप्त हुई है! अरे, यदि दस-दस पैसे के सिक्के हों तो भी गिनते रहता है! और वह भी बगैर भूल के!

'आपको' कुछ नहीं करना है, आपको तो निश्चय करना है कि मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है और फिर पालन नहीं हो पाए तो उसकी चिंता नहीं करनी है। आपको दृढ़ निश्चय करना है कि मेरी सास डाँटती है तो उनके साथ समभाव से *निकाल* करना है, सास दिखाई दे उससे पहले ही मन में तय करना है कि, मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है और इनके साथ 'समभाव से *निकाल*' करना ही है। फिर समभाव से *निकाल* नहीं हो पाए तो आप ज़िम्मेदार नहीं हैं। आज्ञापालन करने के अधिकारी हैं, आप अपने निश्चय के अधिकारी हैं, उसके परिणाम के अधिकारी आप नहीं हैं। आपका निश्चय होना चाहिए कि मुझे आज्ञा का पालन करना ही है, फिर पालन नहीं हो सके तो आपको उसका खेद नहीं रखना है। लेकिन मैं जैसे बताऊँ, उस अनुसार आपको प्रतिक्रमण



## दादावाणी

करना है। अतिक्रमण किया इसलिए प्रतिक्रमण करो। इतना सरल, सीधा व सुगम मार्ग है, इसे समझ लेना है।

यह प्रतिक्रमण तो हमारी सूक्ष्मातिसूक्ष्म खोज है। यदि इस खोज को समझ जाए तो किसी से कोई झगड़ा ही नहीं रहेगा। ऐसा कोई भी एडजस्टमेंट हो जाना चाहिए अपना कि निरंतर अपनी रक्षा हो जाए हर तरह से, व्यवहार व निश्चय में। व्यवहार से दाग पड़ने बंद हो जाएँ

और निश्चय से दाग पड़ने बंद हो जाएँ और बोझ रहित हो जाएँ, हल्के फूल जैसे। यहीं पर मुक्ति का अनुभव करें। जितने कोने टूट गए, जितने खिंचाव टूट गए, उतने तो आप छूट गए न, मुक्त हो गए न! करोड़ों जीव खींचते हैं हमें रस्सी से और जितनी रस्सियाँ छूट गई, उतने मुक्त हुए न! जितने बाकी हैं, वे बाद में छोड़ेंगे। रास्ता यही है, प्रतिक्रमण से छूट जाएगा सबकुछ।

जय सच्चिदानंद

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

### रायपुर

22 अगस्त (मंगल) शाम 4-30 से 7-30 - सत्संग और 23 अगस्त (बुध) शाम 4-30 से 8 - ज्ञानविधि  
स्थल : पंडित दीन दयाल उपाध्याय ओडिटोरियम, सायन्स कॉलेज परिसर, आमानाका, GE रोड़, रायपुर।  
संपर्क : 8889944333

### दिल्ली

26 अगस्त (शनि) शाम 5-30 से 8-30 - सत्संग और 27 अगस्त (रवि) शाम 5 से 8-30 - ज्ञानविधि  
स्थल : तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, तालकटोरा लेन, तालकटोरा गार्डन, राष्ट्रपति भवन क्षेत्र, नई दिल्ली।  
संपर्क : 9810098564

### अडालज

30 अगस्त (बुध) - रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम  
7 सितम्बर (गुरु) - रात 10 से 12-15 - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम  
11 सितम्बर (सोम) - पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम  
12 से 19 सितम्बर : आप्तवाणी 14 भाग-3 पर सत्संग पारायण (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रांसलेशन उपलब्ध रहेगा।)  
नोट : आप्तवाणी-14 भाग-3 गुजराती बुक के पेज नंबर 239 से वाचन होगा।

### अमरेली

परम पूज्य दादा भगवान का 116वाँ जन्मजयंती महोत्सव - 22 से 26 नवम्बर

22 से 25 नवम्बर - सत्संग, 25 नवम्बर - ज्ञानविधि, 26 नवम्बर - जन्मजयंती दिवस

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज: 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687. अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820  
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

इलास : गुरु पूर्णिमा का उत्सव : ता. 1 से 6 जुलाई 2023



अडालज तथा गुजरात के अन्य सेन्ट्रों में गुरु पूर्णिमा का उत्सव : ता. 3 जुलाई 2023





## ऋणानुबंध से कैसे छूटे ?

हमें जिसके साथ पूर्व का ऋणानुबंध हो और वह हमें पसंद ही ना हो, उसका सहवास पसंद ही ना हो और फिर भी अनिवार्य रूप से सहवास में रहना पड़ता हो, तो क्या करना चाहिए ? बाहर का व्यवहार उसके साथ रखना चाहिए, लेकिन अंदर उसके नाम के प्रतिक्रमण करने चाहिए। क्योंकि हमने पिछले जन्म में अतिक्रमण किया था, यह उसका परिणाम है। काँजेज क्या किए थे ? तो कहते हैं, उसके साथ पूर्व जन्म में अतिक्रमण किया था। उस अतिक्रमण का इस जन्म में फल आया है, यानी उसका प्रतिक्रमण करेंगे तो प्लस-माइनस (जोड़ना-घटाना) हो जाएगा। अतः अंदर आप उससे माफी माँग लो। माफी माँगते रहो कि मैंने जो-जो दोष किए हैं, उसकी माफी माँगता हूँ। किसी भी भगवान की साक्षी में माफी माँग लो, तो सब खत्म हो जाएगा।

- दादाश्री

